Date – 03/09/2020

Dr. Sanehlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. – Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. – 8409587640

Class – B.A. – I (Hons.)

Topic – Criticism of Spinoza Substance

Scanned with CamScanner

आलोचना

(1) स्पिनोजा का ईश्वर सर्वव्यापी है। इसमें विश्व की समस्त विविधताओं का लोप हो जाता है। फलस्वरूप अनेकता और व्यक्ति विशेष की विशिष्टताओं का कोई आधार शेष नहीं रह पाता है। इसी संदर्भ में हीगेल ने स्पिनोजा के विरुद्ध यह आक्षेप लगाया है कि - "स्पिनोजा का ईश्वर उस सिंह की गुफा के समान है, जहाँ अनेक जानवरों के अन्दर जाने के पदचिन्ह तो दिखाई देते हैं, किन्तु उनके बाहर आने के कोई पदचिन्ह दिखाई नहीं देते।"

(2) स्पिनोजा ने सम्पूर्ण विश्व को ईश्वरमय माना है। अब यदि ईश्वर पूर्ण है तो विश्व को भी पूर्ण होना चाहिए। यदि विश्व पूर्ण हो तो वहाँ विकास की सम्भावना समाप्त हो जाती है।

Scanned with CamScanner

(3) स्पिनोजा विचार को चित स्वरूप मानते हैं। यदि विचार ईश्वर के चित स्वरूप की अभिव्यक्ति है तो फिर विचारों में भ्रम, भूल और स्वप्न आदि की व्याख्या नहीं हो पाती है। इन्हें ईश्वर की अभिव्यक्ति नहीं ~~मानी~~ माना जा सकता।

(4) स्पिनोजा के ईश्वर की अवधारणा को स्वीकार करने पर नियतिवाद की स्थापना होती है और इसमें मनुष्य की अपनी स्वतंत्रता खंडित होने लगती है।

(5) स्पिनोजा के समानांतरवाद में सर्वमनसवाद की गौण स्वीकृति दिखाई देती है। समानांतरवाद के अनुसार जहाँ शारीरिक क्रिया है वहाँ मानसिक क्रिया भी है। इस प्रकार जगत में सर्वत्र भौतिक परिवर्तनों के मूल में मनस की सत्ता को भी स्वीकार करना पड़ता है। परन्तु ऐसा मानना तर्कसंगत और व्यवहारिक है।

Scanned with CamScanner